इति हास कार का दु:ख

जो कुछ हमने लिखा वही बस अन्तिम है इतिहास,
सत्यान्वेषण हित कृत उद्यम सारे हैं कुप्रयास |
लगा चुके हम भव्य पुरातनता पर पूर्ण विराम,
नव चिन्तन धारा दे मति ने अब पाया विश्राम || (1)

वर्गभेद पर अतिशयोक्ति का करके भूरि प्रयोग,
दिखा दिया है दमित यहाँ पर शदियों से बहुलोग |
करके परिश्रम ढूँढे ऐसे छिपे हुए वृत्तान्त,
सिद्ध हुई इतिहास नाटिका दु:खमय और दु:खान्त || (2)

फैलायी अनवरत यहाँ पर शोषण की बहु भ्रान्ति,
फिर भी हुई न इस समाज में मेरी वांछित क्रान्ति |
करके बहुत कुतर्क बताया बन्धन को ही मुक्ति,
संगीनों को भी कुसुमावृत करने की की युक्ति || (3)

प्रिय हो जाते मुझे त्वरित ही मानव के अधिकार,
यदि हैं राष्ट्र विरुद्ध किसी के कुत्सित बहु आचार |
जब तक अन्य विधान राष्ट्र से ऊपर रखता व्यक्ति,
निज विधान में किन्तु न करना यह घातक पुन रुक्ति || (4)

वह समता ही श्रेष्ठ जहाँ दल शासक हो सब दास,
जहाँ न पाये श्रमरत मानव चिन्तन का अवकाश |
मुदित रहे जन जब तक मिलते श्रम से भोजन वस्त्र,
मत देखो पीछे से शिर पर तना हुआ जो शस्त्र || (5)

है विचित्र सदियों तक सहकर पर का दु:सह त्रास,
अनभिभूत निष्कम्प रहा है जन का आत्म प्रकाश |
जिसको भी हो गया ज्ञात निज गरिमा युक्त अतीत,
नहीं दैन्य में हो सकता है उसका काल व्यतीत || (6)

भास्वरता उन्मुख जिस जन का क्रमश: आत्म प्रकाश,
उनकी नव उन्नयन तुंगता क्या जाने आकाश |
तन से थे स्वतंत्र मन से भी अब हो चले स्वतंत्र,
उनके प्रतिमुख सफल न होंगे दुष्प्रचार के तंत्र || (7)

जो श्रेयस्कर पथारूढ़ हैं प्रेय जिन्हें सुविकास,
ज्ञात जिन्हैं शिव शक्ति समन्वय सिद्दि उन्हीं के पास |
जों उघोगी अवरोधों का करते नित उपहास,
कौन शक्ति उनसे कह सकती हे मानव ! "इति" ह्रास || (8)

लेखक :- शिव कुमार मिश्रा आवड़ी दिनांक 15-09-2017